शताब्दी की रचना लगती है। यह रचना मेरे धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन ने मुझे ३१ मार्च को समर्पित किया था। अभी तक इसका प्रकाशन नहीं हो सका।

हमारा हिन्दी से पंजाबी भाषा में अनुवादित प्रकाशित साहित्य

जैसे मैं कई स्थानों पर लिख चुका हूं कि पंजाब की राज्य व जन संपर्क की भाषा पंजाबी है। इस दृष्टिकोण को सामने रख कर हमने पंजाबी भाषा में लिखना शुरू किया। पंजाबी साहित्य की कमी हमें शुरू से खटकती रही है। इस का प्रमुख कारण है कि जैन धर्म के प्रति पंजाब के लोगों की अज्ञानता। इस अज्ञानता को मिटाने का प्रमुख साधन प्रचार है। प्रचार का प्रमुख साधन भाषा होता है। भाषा वह माध्यम है जो अपनी बात पहुंचाने का सरल व सुगम मार्ग है। जन संपर्क का अच्छा साधन है। धर्म प्रति फैली भ्रांतियों को समाप्त करके आस्था को जन्म देती है। इसी भावना ने हमें सरल साहित्य का पंजाबी का अनुवाद करने की प्रेरणा दी। इस का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

इक समस्या – इक हल १ :

हम दोनों ने १९७२ के बाद लिखना शुरू किया। हमारी पहली कृति आचार्य तुलसी के शिष्य स्वः हनुमान मुनि 'हरिश' की एक लघु कृति थी। यह पुस्तक प्रश्न उत्तर के रूप में थी। इस के दो भाग थे। प्रथम हिस्सा जैन धर्म से संबंधित था। दूसरा भाग अणुव्रत की व्याख्या थी। इस के पहले भाग का अनुवाद मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन ने किया था। यह जैन धर्म के अनुवादित प्रथम पुस्तक थी। मैंने इस पुस्तक का प्राक्थन लिखा था, जिस में जैन धर्म की प्राचीन श्रमण परम्परा का उल्लेख था। पर इस में मेरा पूर्ण

सहयोग था। कृति ने हमारा हौंसला बढ़ाया। फिर एक क्रम चल पड़ा, जो अब तक जारी है। इस क्रान्ति से हम पंजाबी भाषा में जैन साहित्य के प्रथम अनुवादक बन गए।

भगवान महावीर - सिद्धांत ते उपदेश - २ :

यह पुस्तक जैन धर्म की महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस का मूल लेखन राष्ट्र संत उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज ने किया है। यह पुस्तक गागर में सागर है। मात्र १२० पृष्ट की इस पाकेट साईज ग्रंथ में भगवान महावीर के पूर्व कालीन स्थितियां, तीर्थंकर परम्परा, श्रमण व श्रावक परम्परा, प्रभु महावीर के जीवन की घटनाओं के मार्मिक प्रसंग, अहिंसा अनेकांतवाद आदि सिद्धांतों का सरल, सुगम भाषा में विवरण प्राप्त होता है। काफी समय से पंजाबी भाषा में कोई प्रमाणिक जीवन चारित्र उपलब्ध नहीं था। इस बात की कमी मुझे उस मीटिंग में खटकी, जिस में ज्ञानी जैल सिंह मुख्यमंत्री पंजाब सरकार ने ऐसे साहित्य की मांग की थी, जो पंजाबी भाषा में हो। परन्तु जैन समाज, जो भगवान महावीर का २५०० साला निर्वाण महोत्सव मना रहा था, उस के पास ज्ञानी जी के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

मैने अपने प्रिय धर्म भ्राता रविन्द्र जैन का ध्यान इस कमी की ओर दिलाया। उसे प्रेरणा देते हुए मैने कहा, "रविन्द्र ! ज्ञानी जी द्वारा जैन समाज को जो इंगित किया गया है। इस कमी को पूरा करो। जल्दी ही किसी विद्वान द्वारा प्रमाणिक जीवन चारित्र को पंजाबी भाषा में अनुवादित करो।"

मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने मेरे इस संदेश को आदेश मानकर शिरोधार्य किया। उन्होंने एक मास में ४० से ज्यादा जीवन चारित्र पढ़ डाले। अंत में यह ग्रंथ हमें आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज की लाईब्रेरी से प्राप्त हुआ।

उनकी कृपा व आशीवाद से मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने इस ग्रंथ का पंजाबी अनुवाद मात्र दो मास मे कर डाला। इसका सुन्दर आवरण बनाया गया। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ का मैंने आशीवचन लिखा। इस पुस्तक के प्रेरक भण्डारी प्रवर्तक श्री पद्म चन्द जी महाराज व उपप्रवर्तनी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज महाराज बने। उनकी कृपा व आशीवाद से भगवान महावीर चारित्र की दो हजार प्रतियां प्रकाशित हुई। हमारी समिति इस की प्रकाशक संस्था थी। उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज ने आशीवाद दिया। इस पुस्तक के माध्यम से हमारे उनसे संबंध प्रगाढ़ हुए। उन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन की आज्ञा देकर हमारी समिति पर उपकार किया। इस पुस्तक से हमारी पंजाबी लेखक, संस्था, साहित्यकार के रूप में पहचान बनी। २५वीं महावीर निर्वाण शताब्दी पर पंजाब सरकार ने यह कार्य भाषा विभाग को सौंपा गया था पर वह कार्य समय पर संम्पन नहीं हो सका। इसी कार्य को मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने चमत्कारी ढंग से सम्पन्न किया। इसका प्रकाशन श्री आत्म जैन प्रिंटिंग प्रैस लुधियाना से हुआ।

इस ग्रंथ का विमोचन मानसा में एक भव्य समारोह में डी.सी. महोदय ने किया। इस अवसर पर डी. सी. साहिब ने भगवान महावीर पार्क का उद्घाटन किया। यह पुस्तक देश विदेश के विद्वानों व लाईब्रेरीयों में पहुंची। इस की समीक्षा दिल्ली की एक पंजाबी पत्रिका में प्रकाशित हुई जिसे प्रसिद्ध कवि स. गुरूदेव सिंह मान ने लिखा। इसका अंग्रेजी अनुवाद भण्डारी श्री पदम चन्द जी महाराज ने प्रकाशित करवाया।

यह पुस्तक मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। मैंने सोचा अब अच्छे जैन साहित्य को पंजाबी में अनुवादित

करने का समय आ गया है। वस यह पुस्तक हमारे प्रगाढ़ संवंधों को मजवूत करने का साधन वनी। हमें सभी सम्प्रदायों के संत, साधु-साध्वीयों के आशीवाद प्राप्त होने लगे। यह प्रथम जैन पुस्तक थी जिसे किसी प्रकाशन ने विक्री हेतु, हमारी संस्था से खरीदा। हम इस के माध्यम से वहुत से अंतराष्ट्रीय स्तर के जैन विद्वानों से साक्षातकार का अवसर मिला।

जैन धर्म अते दर्शन ३.

श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज महान प्रभावक आचार्य थे। उन्होंने सारा जीवन जैन साहित्य को समर्पित किया था। उन्होंने ४५० से अधिक ग्रंथों का निर्माण प्रकाशन अपनी जिंदगी में किया। जिसमें जैन कथा, दर्शन, आचार, पुरातत्व, साहित्य, ज्योतिष, तर्क, कर्म, आत्मा आदि अनेकों विषयों पर उन्होंने ग्रंथ लिखे। वह सिद्धहस्त लेखक थे। हमारी उनसे प्रथम भेंट रोनिला (हरियाणा) में हुई, जव हम निरयावलिका सूत्र के लिए आशीवाद लिखवाने गए। वह इतने पद पर पहुंच कर भी वड़े सरलात्मा थे। पंजाव में उनका स्वागत अम्वाला शहर में हमारी गुरुणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की देख रेख में हुआ। उनका प्रथम चर्तुमास लुधियाना में था। चर्तुमास में हर रविवार को दर्शन करने जाते थे। एक दिन उन्होंने हमें कहा "आप हमारे साहित्य में किसी ग्रंथ का पंजावी भाषा में अनुवाद करो, जो सव लोगों के लिए उपयोगी हो" आचार्य श्री की वात क्या कहें, ऐसा लेखक व वक्ता मैंने अपने जीवन में कम देखा है। जिस का सारा जीवन साहित्य को समर्पित हो। वह विश्व के हर धर्म के जानकार थे। वह परम अहिंसक थे। पंजाव में डेरा वस्सी में खुल रहे वुच्चडखाने की उन्होंने मुख्य मंत्री श्री वेअंत सिंह

जी से इस ढंग से विरोधता की कि पंजाव सरकार को वुच्चड़खाना जो वन चुका था, उस का लाईसैंस रद्द करना पड़ा। पर दूसरी पार्टी के कोर्ट में जाने के कारण उसे स्टे मिल गया।

ऐसे महापुरूष के वडे-वडे ग्रंथों में से एक पुस्तक चुनना मुश्किल कार्य था जो सरल भाषा में जैन धर्म का परिचय प्रदान करे। मुझे इस संदर्भ में यह जैन धर्म दर्शन पुस्तक उपयुक्त लगी। अव कम्पयूटर का युग आ चुका था। हम ने दोनों इस ग्रंथ का अनुवाद अपनी रविवारीय मीटिंग में मात्र दो महीने में कर डाला। पंजावी साहित्य की प्रसिद्ध संस्था लोक गीत प्रकाशन सरहिंद ने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का जिम्मा लिया। मैं इस प्रकाशन संस्था को पंजाव की सर्वश्रेष्ठ संस्था मनाता हूं। हम यह ग्रंथ टाईप करवा कर आचार्य श्री को समर्पित किया। आचार्य भगवान वोले "वेटा ! यह प्रकाशन का कार्य तुम्हें ही सम्पन्न करना है, हम प्रदेसी पंजावी जानते नहीं।"

आचार्य श्री का समस्त जीवन, जैन धर्म के प्रति श्रद्धा, विनय व आस्था की जीती जागती मिसाल था। उनका गौर वर्ण, मध्य कद, शुद्ध हिन्दी उच्चारण सवके मन को भाता था। वह वहुत तपस्वी आत्मा थे। आचार्य आत्मा राम जी महाराज के वाद समाज को आप जैसा श्रुतधर आचार्य मिला था। वह सव जैन सम्प्रदायों की एकता में विश्वास रखते थे। अपने व्यक्तित्व से वह हर प्राणी को प्रभावित करते थे। ऐसे महापुरूष की आज्ञा को पूरा करने का हमें सौभाग्य मिला। यह जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस वात को हर कभी नहीं भूलेंगे।

सव से वडी वात जो वहुत उल्लेखनीय है इस ग्रंथ का विमोचन अवसर था। इस समय आचार्य श्री देवेन्द्र

मुनि जी महाराज मालेरकोटला में अचानक पधारे थे। इस का प्रमुख कारण था जैन साध्वी श्री हेम कुंवर जी महाराज को १३० दिन का व्रत का पारणा महोत्सव समारोह था। आचार्य श्री का पहले कार्यक्रम और था। वह पहले जम्मू जाना चाहते थे। परन्तु साध्वी जी ने एक भीषण प्रतिज्ञा की कि "मैं अपना व्रत आचार्य श्री के सानिध्य में सम्पन्न करूंगी, नहीं तो यह व्रत चलता रहेगा। जब तक आचार्य श्री के दर्शन नहीं होंगे।" साध्वी श्री पहले भी तप करती आ रही हैं। अब भी तप करती हैं। भविष्य में भी करेंगी। पर ऐसी प्रतिज्ञा उन्होंने पहले कभी नहीं की थी। आखिर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज को चतुर्मास की समाप्ति के बाद मालेरकोटला पधारना था। वह अपने करीब १० साधु साध्वीयों के साथ अहमदगढ़, कुप्प होते हुए मालेरकोटला से ३ किलोमीटर की दूरी पर रूके। उन्हें उस समय तेज बुखार था। आचार्य श्री व्हील चेयर के माध्यम से मालेरकोटला की सीमा में पहुंचे। मालेरकोटला के स्थानीय कांग्रेसी विधायक व मंत्री चौधरी अब्दुल गुफार, नगरपालिका के अध्यक्ष व दूसरी धार्मिक व समाज सेवी संस्थाओं ने अगवानी की । शहर को दुल्हन की भांति सजाया गया। मंत्री साहिब ने आचार्य श्री की व्हील चेयर को अपने हाथों से कुछ दूरी तक चलाया। सभी लोग आचार्य श्री के साथ पैदल चल रहे थे।

श्री सनातन धर्म सभा का महत्वपूर्ण सहयोग इस समारोह को मिला। आचार्य श्री के लिए विशाल पंडाल श्री हनुमान मंदिर में बनवाया गया। इस की तैयारीयां कई दिनों से चल रही थीं। उनकी शोभा यात्रा पर ५० गेट बने। स्थान-स्थान पर जल पान का प्रोग्राम संस्थाओं और दुकानदारों ने किया। पहले दिन आचार्य श्री रती राम जैन स्मारक में, आचार्य भगवान पधारे। शाम के खाने का प्रबंध लंगर कमेटी

श्री हनुमान मंदिर ने किया। यह आपसी भाईचारे का प्रतीक उत्सव था। सारे नगर में आचार्य श्री को घुमाया गया। इस समारोह में हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख व ईसाई संस्थाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समारोह स्थल में एक लाख से ज्यादा लोगों की भीड़ सारे भारत से इकट्ठी हुई। आचार्य श्री का सन्मान विभिन्न संस्थाओं ने अभिनंदन पत्र के माध्यम से किया। आचार्य श्री को एक भव्य सिंहासन पर बैठाया गया। आचार्य श्री का इतिहासक प्रवचन हुआ। वह मालेरकोटला की सांझी संस्कृति से प्रभावित थे। पंजाब सरकार की ओर से चौधरी अब्दुल गुफार मंत्री जी ने आचार्य श्री का स्वागत किया। मंत्री जी ने इस अवसर पर आचार्य देवेन्द्र मार्ग की घोषणा की।

इसी मंगलमय अवसर पर हमारे ग्रंथ का विमोचन हुआ। प्रकाशक थोड़े ही ग्रंथ तैयार कर सका। यह ग्रंथ का विमोचन चौधरी अब्दुल गुफार ने अपने कर कमलों से किया। फिर इस की प्रथम प्रति चौधरी साहिब व हम दोनों ने आचार्य श्री के कर कमलों में समर्पित की। इस भव्य समारोह की शोभा देखते ही बनती थी। इस ग्रंथ के प्रकाशन में आचार्य श्री से हमारा रिश्ता मजबूत हुआ। उन्होंने हमें मंगलमय आशीवाद दिया। यह हमारे जीवन का भव्य समारोह में से एक था।

यह हमारे लिए प्रथम अवसर था जब किसी आचार्य के ग्रंथ का अनुवाद करने का हमें सौभाग्य मिला। यह ग्रंथ देखने में तो पाकेट बुक है, पर ऐसा जैन धर्म का कोई विषय नहीं जिसे जो आचार्य श्री से अछुता रहा हो। जैन धर्म, संस्कृति, पुरातत्व, साहित्य व साहित्यकार सभी के बारे में विपूल मात्रा में सामग्री प्राप्त होती है। इतनी सरल

पुस्तक, जिस में जैन दर्शन का समग्र उपलब्ध हो कम उपलब्ध होती है। इस पुस्तक का अंग्रजी अनुवाद हो चुका था। इस पुस्तक को पढ़ने से हमारे जैन धर्म की मान्यताओं के बारे व सम्प्रदायों के बारे में काफी जानकारी हुई।

पंजाबी अनुवादित अप्रकाशित साहित्य

महावीर दे पंज सिद्धांत १ :

यह हमारी अप्रकाशित रचना है। इस की रचना बहुश्रुत श्री श्रमण संघीय सलाहकार श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने की है। इस में भगवान महावीर के ५ सिद्धांतों का सुन्दर शास्त्रीय परम्परा के अनुसार विवेचन किया गया है। यह सिद्धांत हैं :

१. अहिंसावाद २. अनेकांतवाद
३. ईश्वरवाद ४. अपरिग्रहवाद
५. आत्मवाद

इन ग्रंथों में इन सिद्धांतो की तार्किक ढ़ंग से व्याख्या की गई है। श्री ज्ञान मुनि जी महाराज आचार्य श्री आत्मा राम के प्रमुख शिष्य थे। वह अपने नाम के अनुरूप ज्ञानवान हैं। उन्होंने आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज के नाम से अनेकों संस्थाओं का निर्माण पंजाव में किया है। ५० से ज्यादा ग्रंथ प्रकाशित करवा चुके हैं। इस में प्रज्ञापना सूत्र भाग - ३, (२) अंतकृतदशा, (३) अनुयोगद्वार-२, विपाक सूत्र प्रसिद्ध हैं। आप कवि व वक्ता भी हैं। उनकी महावीर आरती जगत प्रसिद्ध है। यह उनकी रचना अभी अप्रकाशित है। अच्छी व्यवस्था होने पर यह ग्रंथ भी प्रकाशित होगा।

जम्बू दीप गाईड २ :

यह लघु काया पुस्तिका की लेखिका हस्तिनापुर तीर्थ की निर्माण कर्त्ता माता ज्ञानमति जी महाराज हैं। वह महान विदूषी लेखिका हैं। आपकी ५० से ज्यादा ग्रंथ व पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित हो चुकी हैं। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी भाषाओं की महान विदूषी हैं। वह प्रभाविका साध्वी हैं। दिगम्बर परम्परा में, वह आचार्य देश भूषण जी

महाराज की शिष्या हैं। उनकी बहिनें भी उनके संघ में दीक्षित हैं। उनके तीर्थ जीर्णोद्धार के कार्य विशाल हैं। बहुत कम साध्वीयां इतना बड़ा काम कर पाती हैं। उन्होंने अयोध्या जैसे तीर्थ में विशाल निर्माण कार्य किया है। उनका लेखन कार्य, निर्माण के साथ-साथ चलता रहता है। यह पुस्तिका अभी कई कारणों से प्रकाशित नहीं हो पाई। इस पुस्तक में जम्बू दीप का आकार की व्याख्या जैन शास्त्रों अनुसार की गई है। उनके अभिनंदन ग्रंथ में हमारा लेखक पंजाबी भाषा में प्रकाशित हुआ है, जो उनके जीवन पर है।

आचार्य विजयइन्द्रदिन्न सूरि ३ :

पंजाबी की अप्रकाशित रचनाओं में हमारी यह रचना भी अप्रकाशित है। इस में आचार्य विजयइन्द्र दिन्न सूरिश्वर जी महाराज का जीवन चारित्र श्री वीरेन्द्र विजय जी ने हिन्दी में प्रकाशित किया। उनकी प्रेरणा से हमारे द्वारा इस का पंजाबी अनुवाद हुआ। पर आचार्य श्री के गुजरात की तरफ से पधारने के कारण यह अनुवाद भी अप्रकाशित पड़ा है। इस पुस्तक में आचार्य श्री के क्रान्तिकारी जीवन की झलक प्राप्त होती है। विद्वान लेखक ने २५ पृष्ठ की पुस्तक में बहुत कुछ कह डाला है।

स्वतन्त्र पंजाबी साहित्य

अनुवाद के अतिरिक्त हम दोनों पंजाबी भाषा में जैन धर्म का ज्ञान देने वाले स्वतन्त्र ग्रंथों का निर्माण भी किया है। जो हमारी मौलिक रचनाएं हैं। यह कार्य भी हमारे द्वारा अनुवादित साहित्य के साथ-साथ चलता रहा है। इस संदर्भ में पंजाबी प्रकाशनों की एक सूची हम दे रहे हैं, जो हमारे द्वारा रचित है। इन रचनाओं का विवरण इस प्रकार है।

जैन संस्कृति और साहित्य की रूप रेखा १ :

इस लघु कथा पुस्तिका में जैन धर्म की प्राचीनता का दिक् दर्शन कराया गया है। श्रमण व ब्राह्मण संस्कृति के बीच भेद रेखा खींची है। इस पुस्तक का आधार वेद, पुराण, महाभारत, बौद्ध ग्रंथों को बनाया गया है। यह शोध पुस्तिका है। इस का विमोचन विश्व पंजाबी लेखक सम्मेलन दिल्ली के अवसर पर हुआ। वहीं इस पुस्तक का वितरण भी किया गया।

जैन साहित्य की रूप रेखा २ :

इस लघु काया ग्रंथ में १४ पुर्वो, ४५ आगमों की परम्परा, नाम व श्लोक संख्या व विषयों का वर्णन है। इस में जैन दिगम्बर साहित्य का परिचय भी दिया गया है। इसके साथ-साथ जैन आगमों की वाचना का इतिहास व पूर्वो की परम्परा के क्षय होने का वर्णन किया गया है। इस का विमोचन विश्व लेखक सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली के विज्ञान भवन में सम्पन्न हुआ।

भगवान महावीर दे चोनवें उपदेश ३ :

इस पुस्तिका में जैन शास्त्रों से प्रभु महावीर के जीवन उपयोगी संदेश को संग्रह किया गया है। यह उपदेश

जीवन के रहस्य को खोलने में सक्षम हैं। यह संदेश हर काल, समय, व्यक्ति के लिए समता, ऐकता व समन्वय का संदेश देते हैं। पंजाबी भाषा में यह प्रयत्न प्रथम वार हुआ। इस का विमोचन भी विश्व पंजाबी लेखक सम्मेलन के अवसर पर देहली के विज्ञान भवन में सम्पन्न हुआ।

भगवान महावीर के समकाली इतिहासक महापुरूष ४ :

पंजाबी भाषा में जैन इतिहास पर लिखा गया हमारा पहला कथा संग्रह है। इस में भगवान महावीर के प्रसिद्ध शिष्य राजा श्रेणिक, मंत्री अभय कुमार, अतिमुक्त कुमार, महासती चन्दन वाला, मृगावती, मेघ कुमार, आदि भव्य प्राणीयों का जीवन इतिहासक स्रोतों में लिखा गया है। संगरूर से प्रकाशित होने वाले दैनिक कौमी देन में किश्तवार प्रकाशित हुआ। यह जैन कहानीयों का किसी दैनिक समाचार पत्र का पहला प्रकाशन था। यह प्रकाशन ६० किश्तों में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का प्रकाशन स्वतन्त्र रूप से नहीं हुआ।

भगवान महावीर ५ :

लगभग २५०० वर्षों से भगवान महावीर का जीवन चारित्र पंजाबी भाषा में किसी ने लिखा नहीं था। मुझे प्रसन्नता है कि यह इतिहासक कार्य मैंने व मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने कर दिखाया। सैकंडों हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत, उर्दू व अंग्रेजी के जीवन चारित्रों का अध्ययन किया। उनकी शैली देखी। इस चारित्र को लिखने का हमें सौभाग्य प्रथम वार प्राप्त हुआ। इस ग्रंथ की समीक्षा दैनिक पंजाबी ट्रिब्यून व अजीत में प्रकाशित हो चुकी है। जैन पत्र-पत्रिकाओं में इस की समीक्षा अलग प्रकाशित हुई। यह ग्रंथ था जिस

का विमोचन विश्व लेखक पंजाबी सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में विश्व के कोने-कोने से पंजाबी लेखक आए थे। इस का विमोचन इसी सम्मेलन में किया गया। यह ग्रंथ इंगलैण्ड, पोलैण्ड, अमेरिका, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, मलेशिया तक पहुंचा।

इस ग्रंथ के बारे में आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने एक घटना सुनाई। वह कहने लगे "जब मैं इंटरनैशनल महावीर जैन मिशन न्यूयार्क जैन मिशन के लिए यू०एन०ओ० में स्थान पाने के लिए प्रार्थना पत्र भेजा। मेरी भेंट एक सरदार जी से हुई। वह कहने लगे "मैं आप के धर्म को इंटरनैशनल नहीं मानता, संसार में महावीर को कौन जानता है ? जैन धर्म तो केवल भारत तक सीमित है।"

"मेरे पास उत्तर देने के लिए कुछ न था। कारण यह कि मैं पहला संत था जो विश्व के कोने-कोने में जैन धर्म के प्रचार को निकला था। मैंने कुछ सोचा, फिर मुझे आप के पंजाबी महावीर चारित्र का ध्यान आया। सौभाग्य से वह पुस्तक मेरे पास थी। मैंने वह पुस्तक सरदार जी को भेंट करते हुए कहा, "देखिए ! जैन साहित्य संसार की हर भाषा में उपलब्ध है। हर कोने-कोने में जैन आगम पढ़ने वाले हैं। यहां तक कि पंजाब की भाषा में भी यह पुस्तक आप के सामने है, और आप को क्या अंतर्राष्ट्रीय प्रमाण चाहिए ?"

यह पुस्तक पाकर सरदार जी प्रसन्न हुए। उन्होंने मेरे से और पंजाबी साहित्य मांगा। जो हमारे सिद्धाचलम में था। उन्होंने आप की पुस्तक पाकर ही, मेरी संस्था को यू०एन०ओ० में स्थान दिया। आज संसार का १२वां धर्म जैन धर्म है। इस का प्रचार स्थानीय भाषा में करने के बहुत आधार हैं। यह पुस्तक जैन धर्म की परम्परा से शुरू होती है। इस में प्रभु महावीर के पूर्वभवों का वर्णन किया गया है।

भगवान महावीर के जन्म से पूर्व की स्थितियों, उनके जन्म दिन पर देव आगम, वचपन, दीक्षा, तपस्या, धर्म प्रचार का संक्षिप्त वर्णन है। यह ग्रंथ इतना प्रसिद्ध हुआ कि शीघ्र ही इस का द्वितीय प्रकाशन हुआ। जो गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के सुश्रावक श्री सुशील कुमार जी जैन प्रधान एस. एस. जैन सभा करोल वाग, दिल्ली वालों ने अपनी माता जी की पुनः स्मृति में प्रकाशित करवाया। इस में से भगवान महावीर के जीवन से संवंधित चित्र भी प्रकाशित किए गए हैं। पहले एडीशन में चित्र कम थे। इस एडीशन में भगवान महावीर के जीवन चारित्र में प्रैस की गल्तीयों को दूर किया गया। यह सारा कार्य ६ दिसंवर १९९२ के वाद राम जन्म वावरी मस्जिद भूमि विवाद के समय प्रकाशित हुआ। इसकी जिम्मेवारी पहले की तरह मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने निभाई। यह ग्रंथ हमारी ऐसी रचना थी जिसे हम परिचय पत्र कह सकते हैं। यह पुस्तक जैन संस्थाओं में वांटी गई। यह पुस्तक पंजावी विश्वविद्यालय पटियाला के वी.ए. प्रथम (धर्म) में सुझाव पुस्तिका के रूप में मान्य है।

भारती साहित्य विच भगवान महावीर ६ :

भारती साहित की जव हम चर्चा करते हैं तो हमारा ध्यान जैन, वौद्ध, वैदिक साहित्य पर जाता है। प्रस्तुत निवंध में वैदिक परम्परा में भगवान ऋषभ देव का वर्णन वेद, पुराण, उपनिषद आदि ग्रंथों के आधार में किया गया है। वैदिक ग्रंथों में प्रभु महावीर का वर्णन ना आने के कारण वताए गए हैं। इस के विपरीत वौद्ध परम्परा में प्रभु महावीर से संवंधित घटनाओं का वर्णन ५४ से ज्यादा वार आया है। वौद्ध परम्परा भगवान पार्श्वनाथ की चतुर्याम परम्परा का समर्थन करती है। इस के वाद जैन परम्परा में आगम व स्वतन्त्र साहित्य दिगम्वर व श्वेताम्वर परम्परा से मिलता है।

यह भारत की प्राचीन व वर्तमान भाषाओं में उपलब्ध है। हम ने सभी प्रमुख साहित्यों को एक स्थान पर इकट्ठा किया है। इस पुस्तक का समर्पण साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने अपने कर कमलों से किया।

साडा साहित ७ :

यह लघु काया पुस्तक है। इस में हमारे द्वारा प्रकाशित व अप्रकाशित ग्रंथों का विवरण दिया गया था। यह ग्रंथ अब प्रकाशित हो चुके हैं। इस का विमोचन मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने मेरे द्वारा करवाया। इस पुस्तक में हमारे पंजाबी-हिन्दी साहित्य का विवरण है। यह पुरुषोत्तम प्रज्ञा का अंक है, जो मेरे जन्म दिन पर मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने मुझे भेंट करते हैं।

जैन आगम साहित ८ :

इस पुस्तक में सर्वप्रथम जैन धर्म के १४ पूर्वों का परिचय दिया गया है। इस के बाद अंग, उपांग, मूल सूत्र, छेद, मंत्र, प्रकिर्णक, टीका, चुर्णि, निर्युक्ति पर प्रकाश डाला गया है। ४५ आगमों के नाम, उनमें वर्णित विषय, उनकी टीका सभी की व्याख्या पंजाबी भाषा में की गई है। यह प्रथम प्रयास है कि पाठक जैन आगम में वर्णित विषयों को अपनी भाषा में जान सकें। इस का विमोचन साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने किया था।

जैन धर्म दे तीर्थंकर ९ :

इस पुस्तक में जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों का परिचय व घटनाओं का वर्णन पंजाबी भाषा में दिया गया है। उनके माता-पिता का नाम, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान व मोक्ष

स्थान का विवरण, सरल पंजावी भाषा में वर्णन करने की चेष्टा की गई है।

गणधरवाद १० :

हर तीर्थंकर के गणधर होते हैं, जो प्रभु की वाणी का संकलन करते हैं। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के ११ गणधर थे। इनमें प्रमुख गणधर इन्द्रभूति गौतम् थे। कई अज्ञानी इस गौतम को महात्मा बुद्ध मान लेते हैं। पर ऐसा नहीं है। यह सब ब्राह्मण थे। सभी गणधरों ने प्रभु महावीर के दरबार में अपने प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया था। फिर इन्होंने अपने हजारों शिष्यों के साथ दीक्षा प्राप्त की थी। दीक्षा से पहले हर गणधर के मन में कुछ प्रश्न थे। इन प्रश्नों व उनके उत्तर की चर्चा इस पुस्तक में की गई है। गणधर वाद पर दार्शनिक चर्चा का एक मात्र जैन पंजावी ग्रंथ है। इस में लिए जीव आत्मा, नरक-स्वर्ग, देव, कर्म, ईश्वर आदि विषय पर चर्चा की गई है।

जैन धर्म - इक संखेप जानकारी ११:

यह २५१ पृष्ट का विशाल ग्रंथ है। यह पुस्तक बी.ए. तृतीय (धर्म) में पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के धर्म अध्ययन विभाग द्वारा सुझाव पुस्तिका के रूप में मान्य रही है। इस ग्रंथ पर दैनिक ट्रिब्यून में डा० धर्म सिंह ने समीक्षा लिखी। विद्वानों में इस ग्रंथ की मांग बहुत रही है।

इस ग्रंथ में जैन धर्म की प्राचीनता, धर्म, दर्शन, संस्कृति व मान्यताओं को प्रकट करने वाली एक मात्र पुस्तक है। इस पुस्तक के तीन भाग हैं। प्रथम भाग में जैन परम्परा, संस्कृति व साहित्य को चर्चा का विषय बनाया गया है।

दूसरे भाग में नवकार मंत्र की व्याख्या है। तीसरे भाग में जैन दर्शन की चर्चा है। यह ग्रंथ में जैन धर्म की

मान्यताओं के बारे में श्रद्धा से लिखा गया है। इस में २४ तीर्थंकरों का जीवन वृत, भारत व विदेशों में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का वर्णन है। इस भाग में जैन राजाओं का वर्णन भी है।

दूसरे भाग में ही साधु, साध्वी, उपाध्याय व आचार्य के गुणों का वर्णन किया गया है। इसी खण्ड में ६ तत्व व षट द्रव्यों का विस्तृत वर्णन है।

तृतीय भाग में अनेकांतवादं, प्रमाण, नय, निक्षेप, आत्मा, परमात्मा, गुण, स्थान लेश्या व मोक्ष संबंधी जैन मान्यताओं का वर्णन किया गया है। जैन धर्म भारत का प्राचीनतम स्वतन्त्र धर्म है। इस वात पर जोर दिया गया है। इस ग्रंथ का समर्पण आचार्य सुशील कुमार जी महाराज के एक अंतराष्ट्रीय जैन सम्मेलन के अवसर पर विज्ञान भवन में किया था। यह ग्रंथ जैन दार्शनिक परम्परा को समझने का एक मात्र साधन है। इस ग्रंथ में जैन परम्पराओं और मान्यताओं का पूर्ण ध्यान रखा गया है। इस ग्रंथ में जैन पर्वो का वर्णन भी किया गया है। इस ग्रंथ का विमोचन पंजावी यूनिवर्सिटी के प्रांगन में हुआ था। हमारी कोशिश रही है कि जैन धर्म का कोई विषय ऐसा न रहे, जो अछूता हो। इस में अन्य वातों के साथ जैन तीर्थ का संक्षिप्त परिचय है देव, गुरू व धर्म की खुल कर व्याख्या नवकार मंत्र में आ गई है। जैन काल गणना का उल्लेख भी किया गया है। अरिहंत, सिद्ध के गुण तीर्थंकरों, अतिशयों का वर्णन भी कर दिया गया है। इस ग्रंथ की भूमिका फ्रांस की विदूषी डा० नलिनि वलवीर ने लिखी है। यह सूत्रकृतांग का भाग की भूमिका का भाग भी है इस पुस्तक को पढ़े विना सूत्रकृतांग पढ़ना कठिन है।

बौद्ध साहित्य विच नात पुत्त (भगवान महावीर) १२ :

इस पुस्तक में हमने भगवान महावीर का जीवन बौद्ध त्रिपिटिको साहित्य से संकलित करके बताया है कि जैन धर्म बौद्ध धर्म से प्राचीन है। महात्मा बुद्ध व भगवान महावीर की इतिहासकता का प्रमाण इस पुस्तक में घटित होता है। बौद्ध साहित्य में भगवान महावीर को प्रतिद्वंद्वी के रूप में दिखाया गया है। यह लेख आस्थांजली के पंजाबी भाग में प्रकाशित हुआ था। आस्थाजली एक अभिनंदन ग्रंथ है जिसका प्रकाशन आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज के ५०वीं दीक्षा जयंती पर किया गया था।

पुरातन पंजाब विच जैन धर्म ७ :

हर धर्म का अपना इतिहास होता है जिस धर्म जाति का इतिहास नहीं वह कौम कहलाने की हकदार नहीं है। जैन धर्म का अपना इतिहास है। परम्परा, मान्यताएं हैं। हर राज्य, हर काल में जैन किसी किसी रूप में विद्यमान था, है, भविष्य में रहेगा। पंजाव हमलावरों की भूमि रही है। इन विदेशी आक्रमणकारीयों के कारण जैन धर्म में प्राचीन इतिहास में कम सामग्री उपलव्ध होती है। पंजाव में जैन धर्म का इतिहास जैन धर्म जितना पुराणा है। क्योंकि सभी तीर्थंकरों का आगमन पंजाव में रहा है। उन्होंने यहां तपस्या की है, धर्म प्रचार किया है।

काफी समय से एक प्रश्न विद्वानों के सामने घूमता रहा है कि जैन धर्म पंजाव में कव आया ? इस प्रश्न का उत्तर इतना ही है कि पंजाव में जैन धर्म हर काल में विद्यमान रहा है। प्राचीन पंजाव का, प्राचीन पंजाव का नाम सप्त सिंधु प्रदेश था। वेदों में भी सात नदीयों की चर्चा की

गई है। गणतंत्र युग में पेशावर से मथुरा तक क्षेत्र का नाम उतरापथ था। इसी मार्ग से जैन तीर्थंकर भ्रमण करते रहे हैं। भगवान ऋषभदेव ने इस पावन भूमि को पवित्र किया। फिर इसी भाग में कुरुदेश में भगवान शांतिनाथ, भगवान कथुनाथ जी, भगवान अरहनाथ का जन्म हुआ। इस धरती पर इन भगवानों के चार कल्याणक हुए। स्वयं श्रमण भगवान महावीर इस मार्ग से कई वार पधारे। अपने तपस्या काल में वह सैयविया (स्यालकोट), थूनाक सन्निवेश (कुरुक्षेत्र), हस्तिनापूर, मोका (मोगा), वीतभपत्तन (भेरा पाकिस्तान) व रोहतक नगरी में पधारने का इतिहासक प्रमाण उपलब्ध है। लाखों साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओं ने इस क्षेत्र को जैन कला, पुरातत्व, व मन्दिरों से भर दिया। यहां विपूल मात्रा में साहित्य लिखा गया। श्वेताम्बर जैन पट्टावलीयों मे इस क्षेत्र में हुए जैन धर्म के प्रचार का वर्णन है। प्राचीन पंजाव की सीमाओं में सिन्धु, सोविर, जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पूर्व व पश्चिमी पंजाव, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश का मेरट जिला के आस पास का क्षेत्र व राजस्थान का गंगानगर जिला था।

कल्हण की राजतरंगणी इस वात की साक्षी भरती है कि अनेक सम्राटों ने जैन धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में किया था। श्री नगर की स्थापना जैन राजा अशोक ने की थी। जो मोर्य अशोक से भिन्न था। भगवान महावीर के वाद भी जैन धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में होता रहा। इस का कारण भगवान महावीर के निर्वाण के २४०० वर्ष तक मथुरा जैन धर्म, कला का केन्द्र था। वैसे भी सिन्धु घाटी की सभ्यता में जैन धर्म से संवंधित कई मुद्राएं उपलब्ध हैं। यह प्रान्त वहुत से जैन धर्म के प्रचारकों की जन्म भूमि, कर्म भूमि, दीक्षा भूमि है। पंजाव के राजाओं ने जैन धर्म को राजधर्म के रूप

में अपनाया। इस बात की जानकारी जन साधारण को ना के बराबर है। वैसे भी इस विषय पर किसी ने काम नहीं किया था। हमें अपने लेखक जीवन में कई बार विश्वविद्यालयों के प्रोफैसरों को इस प्रश्न का अधूरा उत्तर देना पड़ता।

हम बहुत परेशान थे। इस विषय पर कोई लिखत सामग्री किसी भाषा में उपलब्ध नहीं थी। मैंने पुराणों के अंदर भगवान ऋषभदेव का वर्णन पढ़ा। वेद, पुराण महाभारत सभी ग्रंथों की जन्म भूमि प्राचीन पंजाव में यह पंचनंद क्षेत्र है। वेद, पुराण, वोद्ध ग्रंथ, जैन ग्रंथ व मुस्लिम युग में जैन धर्म की स्थिति का मुझे पता चला। हम दोनों ने पंजाव के पुरातत्व स्थलों का भ्रमण किया। हमारे सामने कल्याण, जींद, नारनौल, कुरुक्षेत्र, पिंजौर, सुनाम, वठिण्डा, फरीदकोट, अरथलवोहल, अग्रोहा,, हिसार से उपलब्ध प्राचीन प्रमाण प्रतिमा के रूप में थे जो हमें आठ सदी से गुप्तकाल तक ले जाते थे। सिन्धु घाटी की कई सीलें जैन धर्म के प्रमाण को ८००० ई.पू. तक ले जाती है।

कांगडा किला में मूल नायक भगवान ऋषभदेव की जगत् प्रसिद्ध प्रतिमा है। इस के पास वैद्यनाथ पपरोला में खंडित मूर्तियों के शिलालेखों का प्रमाण मिला। कुछ प्राइतिहासक व इतिहासक घटनाओं का पता पट्टावलीयों के माध्यम से चला। समाना की प्राचीन दादावाडी, मालेरकोटला, पटियाला, फरीदकोट, अमृतसर, लाहौर, स्यालकोट, गुजरांवाला, मुल्लतान, लुधियाना, फगवाड़ा में यतियों के डेरों से प्राचीन सामग्री ने इस ग्रंथ को संपूर्ण करने में सहायता की। यह पंजाव का जैन इतिहास खोजने के संदर्भ ग्रंथ वन गया। चारों सम्प्रदायों में कव किसका आगमन हुआ। परम्पराओं की वात चली, प्रभाविक साधु, साध्वीयों, लेखकों, स्वतंत्रता सेनानीयों का परिचय दिया गया। यह ग्रंथ हमारी ५ साल की कठोर श्रम